पृष्ठभूमी - मध्यस्थ दर्शन (जीवन विद्या) - सहअस्तित्ववाद

मध्यस्थ दर्शन (अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिंतन) या सहअस्तित्ववाद मानव की समझदारी में एक नयी देन हैं.यह अमरकंटक निवासी श्री ए नागराज द्वारा किये गए अस्तित्व के मूल अनुसन्धान की उपलब्धी है और विगत के कोईभी विचारधारा एवं धारणा पर यह आधारित नहीं है.यह प्रस्ताव वास्तविकता(सत्य) , अस्तित्व एवं मानव के स्वरुप को प्रस्तावित करते हुए मानव की समझदारी एवं जीने के सभी आयामों को सम्पूर्णता से स्पष्ट करनेवाला प्रस्ताव है. यह प्रस्ताव प्रचलित भौतिकवाद और आदर्शवाद (आध्यात्मिकता, साम्प्रदायिकता, अधि-भौतिकता) के "विकल्प" के रूप में मानवजाती के सम्मुख मूल्याङ्कन एवं अध्ययन के लिए प्रस्तुत है. इसमे मानवजाति के सभी समस्याओ एवं प्रश्नों का समाधान हैं.

पुरे अस्तित्व और उसमे मानव प्रयोजन को जानने की तीव्र जिज्ञासा के साथ श्री ए नागराजजी ने २० साल तक वैदिक विचार आधारित विधि से साधना कियी.इससे उनको समाधी अवस्था प्राप्त तो हुई , लेकिन उनकी ज्ञान - जिज्ञासा की तृप्ति नहीं हुई. उसके बाद उन्होंने स्वयंस्फूर्त प्रेरणा से पतंजलि द्वारा प्रतिपादित अष्टांगयोग क्रियाओं में से अंत की तीन क्रियओंका(जिनको संयम कहते है) क्रम उल्टा करके संयम किया. (साधना- ज्ञान के उद्देश्य से किया गया तीव्र अध्यात्मिक प्रयास, शाब्दिक अर्थ - संयम पाना; समाधि- भारतीय वैदिक विचार के अनुसार एक ऐसी स्थिति जिसमे "अज्ञात" को "ज्ञात" होने की शक्ति है,संयम- समाधी के बाद प्राप्त अवस्था)

इसके फलस्वरूप उनको पुरे अस्तित्व का दर्शन हुआ तथा उनके मानव प्रयोजन एवं अस्तित्व सम्बन्धी सभी प्रश्नो का उत्तर मिला. उनको अनुभव हुवा की

- अस्तित्व सहअस्तित्व है,
- प्रकृति की सभी इकाई व्यापक सत्ता में संपृक्त है
- अस्तित्व मूल में व्यवस्था है , उसमे संगीतमयता निहित है
- मानव ही अज्ञानवश या भ्रमवश समस्या को जन्म देता है

यह समय था -१९५० से १९७५ तक, जब अमरकंटक के घने जंगलो में साधना सम्पन्न हुई. इसके उपरांत उन्होंने , इस समझ का प्रस्ताव , हिंदी भाषा में एक नए दर्शन के स्वरुप में "मध्यस्थ दर्शन- सहअस्तित्ववाद " के नाम से स्वयं प्रकशित १३ पुस्तकों के द्वारा प्रस्तुत किया.

यह प्रस्ताव:

- हमारे मूल प्रश्न - जैसे, अस्तित्व और सत्य की धारणा, ब्रह्मांडीय व्यवस्था ,चैतन्य इकाई ("स्वयं" या "मैं" जिसको "जीवन" कहा) और चेतना ,मानव का स्वरूप और अस्तित्व में प्रयोजन - का उत्तर देता है.
- यह मानवीय आचरण, मानवीयता , मानव मूल्य और मानवधर्म को पहचानता है और परिभाषित करता है.
- यह ज्ञान,विवेक एवं विज्ञान पूर्ण प्रस्ताव है जो प्रचलित शिक्षा, मानवीय आचरण, राष्ट्रिय और मानवीय व्यवस्था, मानवीय संस्कृति ,मानवीयता तथा मानवीय आचरण के शाश्वत विकल्प रुप में है.
- इस आधार पर जीने के फलस्वरूप अखंड समाज और सार्वभौम व्यवस्था साकार हो सकती है जहाँ मानवजाति अपने आप में और प्रकृति के साथ संतुलित होगी.
- यह प्रस्ताव हर "क्यों?" और "कैसे?" का उत्तर देता है. यह कोई कल्पना या आदर्शवाद नहीं है बल्कि वास्तविकता को "जैसा है" वैसे अनुभव होने/करने से प्राप्त हुआ है .

इसकी मूल धारणा है की इस धरती पर मानव अब तक चेतना की एक अविकसित अवस्था-जिसको "जीव चेतना" कहा- में जीता आया, जिसके परिणामस्वरूप मानव की स्वयं की, अस्तित्व की एवं मानवीय प्रयोजन की , सम्बन्ध की समझ , अपूर्ण और भ्रमित रही. यह "अजागृत" जीने की अवस्था या "जीव चेतना" ही हमारे सभी चारो स्तर की समस्याओं का- (व्यक्ति , परिवार , समाज और प्रकृति) - मूल कारण है. मानव की मूल आवश्यकता ज्ञान है जिसको पाकर वह जागृत होकर "विकसीत चेतना" या "मानवीय चेतना" से "देव चेतना" और "दिव्य चेतना" में जी सकता है.अस्तित्व स्थिर है और मानव जागृति निश्चित है. तात्पर्य-मानव के सभी प्रश्नों का उत्तर मिलना संभव है और हमारे लक्ष्य को - जो हर व्यक्ति में,परिवार में , समाज में ,राष्ट्र में तथा अन्तर्राष्ट्र में सुख और सामंजस्य है- उसको हम पा सकते है. मानव और प्रकृति में या अस्तित्व में कोई अंतर्विरोध नहीं है.

यह प्रस्ताव न तो कोई प्रचलित विचारधारा या परम्परा से सम्बन्धित है, न किसीका खंडन या मंडन करता है. यह वास्तविकता और सत्य पर आधारित प्रत्यक्ष एवं निष्पक्ष प्रस्ताव है. अतएव यह-एक तर्कसंगत, पंथ-निरपेक्ष, सार्वभौमिक , बोधगम्य प्रस्ताव है जिसे जिया जा सकता है. यह प्रस्ताव साहित्य रूप में उपयुक्त शब्दों की एक नयी मूल परिभाषा के साथ लिखा गया है. यह कोई मान्यता नहींही है , बल्कि इसे अपने अधिकार पर जांचना है, जानना है - इसीको "ज्ञान" की प्रक्रिया कहा.

विगत २० साल से हमारे जैसे कई लोग, जीवन की समस्याओं से ग्रसित,मानव प्रयोजन एवं सत्य की जिज्ञासा के साथ और मानवीय समस्याओं तथा परिस्थिति से व्यथित, इस प्रस्ताव से परिचित हुए और इसका अध्ययन किया. हम सब , व्यक्ति तथा परिवारोंका एक ऐसा समूह है , जो इस प्रस्ताव को समझनेमे और इसके अनुसार जीने में लगे है. इससे प्राप्त स्पष्टता, अपने में गुणात्मक परिवर्तन और मानव के सभी आयामों की समस्यओंका समाधान होने की सम्भावना को देख, हमें यह आवश्यक और योग्य लगा, की यह प्रस्ताव सम्बन्धी सूचना को आपके साथ , मानव जाती के साथ बांटा जाए.

इस समझ पर आधारित प्रचलित शिक्षा में बदलाव के लिए कई गतिविधियाँ भारत में जारी है. इस धरती के सभी मानव एवं सभी विश्वविद्यालयों से यह अनुरोध है के यह प्रस्ताव को समझा जाए, जांचा जाए.हर पुरुष/स्त्री को अपने स्वयं को समझने का यह प्रस्ताव है. यह प्रस्ताव एक मानव की क्षमता में प्रस्तुत एक मानव से दुसरे मानव के लिए है.

यह प्रस्ताव सर्वशुभ के अर्थ में है .

अधिक जानकारी

जीवन विद्या शिविर: **www.jeevanvidya.info** |

मध्यस्थ दर्शन: **www.madhyasth-darshan.info**

लेख जिम्मेदारी – श्रीराम नरसिम्हन (in English) | विद्यार्थी | जून २०१२ | zshriram@gmail.com

हिंदी अनुवाद: हेमंत मोहरीर, नागपुर

मूल स्रोत: मध्यस्थ दर्शन (सह अस्तित्ववाद) - प्रणेता एवं लेखक: ए नागराज